

# डॉ. जेम्स एस. स्पीगल, ईसाई नैतिकता, सत्र 6, सदाचार नैतिकता

© 2024 जिम स्पीगल और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. जेम्स एस. स्पीगल द्वारा ईसाई नैतिकता पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 6 है, जो सदाचार नैतिकता पर आधारित है।

ठीक है, तो नैतिक सिद्धांतों के हमारे सर्वेक्षण में हम जिस अगले प्रमुख नैतिक सिद्धांत की जांच करने जा रहे हैं, वह है सदाचार नैतिकता।

अब तक, हमने कुछ नैतिक सिद्धांतों पर गौर किया है जो हमें नैतिक रूप से मार्गदर्शन करने में नैतिक सिद्धांतों की भूमिका पर जोर देते हैं, जैसे कि उपयोगितावाद और उनकी उपयोगिता का सिद्धांत। कांटियन नैतिकता में, केंद्रीय सिद्धांत स्पष्ट अनिवार्यता है, और हम सामाजिक अनुबंध सिद्धांत में देखते हैं कि वहाँ कई तरह के सिद्धांतों और बुनियादी अधिकारों की पहचान की गई है। उन सभी आधुनिक नैतिक परंपराओं में जो बात आम है, वह यह विचार है कि, अंततः, नैतिकता के संदर्भ में हमारा मार्गदर्शन करने के लिए, हमें कुछ बुनियादी सिद्धांतों की आवश्यकता है।

नैतिक जांच का केंद्र बिंदु यही है। सदाचार नैतिकता उस दृष्टिकोण से अलग है, लेकिन यह कोई हालिया आंदोलन नहीं है, हालांकि सदाचार नैतिकता निश्चित रूप से बढ़ रही है। यह पिछली पीढ़ी में सदाचार नैतिकता का एक प्रकार का पुनर्जागरण रहा है।

यह वास्तव में प्राचीन यूनानियों, सुकरात, प्लेटो और अरस्तू से चली आ रही सभी नैतिक परंपराओं में सबसे प्राचीन है। हालाँकि, सदाचार नैतिकता का विशिष्ट दृष्टिकोण यह है कि यह नैतिक सिद्धांतों के बजाय चरित्र लक्षणों पर ध्यान केंद्रित करता है। सदाचार नैतिकता में, हमें यह मार्गदर्शन करने के लिए किसी प्रकार का अंतिम नियम खोजने में रुचि नहीं है कि हमें कैसे कार्य करना चाहिए, बल्कि, सदाचार नैतिकता में, उत्कृष्ट चरित्र लक्षणों, आदर्श नैतिक नमूने की विभिन्न विशेषताओं, एक ऐसे व्यक्ति पर ध्यान केंद्रित किया जाता है जो अपने चरित्र में सभी प्रकार की विशेष उत्कृष्टताओं को प्रदर्शित करता है।

इसलिए वे कहेंगे, सद्गुण नैतिकतावादी कहेंगे, कि नैतिकता में उचित ध्यान लोगों पर है, सिद्धांतों पर नहीं। और यहीं पर आधुनिक नैतिक सिद्धांत गलत दिशा में चला गया है, क्योंकि इसका सारा ध्यान व्यक्तिगत चरित्र लक्षणों के बजाय सिद्धांतों पर है। प्राचीन दुनिया में सद्गुण नैतिकता के सर्वश्रेष्ठ प्रतिपादक अरस्तू हैं।

अब, सुकरात और प्लेटो, जो क्रमशः अरस्तू के बौद्धिक दादा और पिता थे, निश्चित रूप से सदाचार नैतिकतावादी थे, और उन्होंने सद्गुणों की शिक्षा देने और व्याख्या करने में बहुत काम किया। लेकिन अरस्तू ने अपनी ऐतिहासिक पुस्तक, निकोमैचेन एथिक्स में सद्गुण नैतिकता को

व्यवस्थित किया। उन्होंने वास्तव में पश्चिमी विचार के इतिहास में सभी समय के लिए सद्गुण नैतिकता का एजेंडा निर्धारित किया।

तो, अरस्तू ने जो सबसे बड़ा सवाल उठाया है, वह यह है कि मनुष्य के लिए सबसे बड़ा अच्छाई या टेलोस क्या है? टेलोस एक ग्रीक शब्द है जिसका अर्थ है अंत, उद्देश्य, लक्ष्य, उद्देश्य या कार्य। वह जानना चाहता है कि हमारा अंतिम टेलोस, हमारा अंतिम अच्छाई, हमारा अंतिम लक्ष्य क्या होना चाहिए। और उसका जवाब है खुशी, गर्मजोशी और मधुर भावनाओं के अर्थ में नहीं, बल्कि परम कल्याण के अर्थ में।

ग्रीक शब्द यूडेमोनिया खुशी की एक बहुत व्यापक अवधारणा है, जिसे हम आमतौर पर इस शब्द से जोड़ते हैं। लेकिन परम कल्याण हमारी व्यापक भलाई है, और वास्तव में यह क्या है, एक इंसान के लिए यूडेमोनिया का अनुभव या प्राप्ति का क्या मतलब है, यह हमारे विशेष अद्वितीय कार्य द्वारा परिभाषित या निर्धारित किया जाएगा। एक चिम्पांजी या एक पोर्पोइज़ या एक कुत्ते के विपरीत, मनुष्य के रूप में हमारा विशिष्ट कार्य क्या है? मनुष्य के पास कुछ प्रकार का विशिष्ट, अद्वितीय कार्य होना चाहिए जो मनुष्य के रूप में हम कौन हैं और क्या हैं, इसके लिए विशिष्ट हो।

अरस्तू, अन्य प्राचीन यूनानियों की तरह, सोचते थे कि मनुष्य के रूप में जो चीज़ हमें अलग करती है, वह है हमारी तर्क करने की क्षमता। हम तर्कसंगत प्राणी हैं। हमारे पास तार्किक, तर्कसंगत विचार करने की क्षमता है, और यही बात हमें जानवरों से अलग करती है, और इसी के मद्देनजर हमें अपने परम अच्छे को समझना चाहिए।

इसलिए, यही कारण है कि अरस्तू इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि हमारा सबसे अच्छा जीवन, मनुष्य के लिए सुखी जीवन, चिंतन का जीवन है, और इससे उनका मतलब सिर्फ़ बैठकर कल्पना करना, चिंतन करना और ध्यान लगाना नहीं है। नहीं, इसमें समय-समय पर ऐसा शामिल हो सकता है लेकिन चिंतनशील जीवन, तर्क का जीवन भी बहुत सक्रिय है। हमें हर उस चीज़ में तर्क और सावधान, आलोचनात्मक विचार लागू करने में सक्रिय रूप से शामिल होना चाहिए जो हम करते हैं, रचनात्मक रूप से उत्पादक रूप से, जिस तरह से हम चीज़ें बनाते हैं, जिस तरह से हम समाज को संगठित करते हैं, जिस तरह से हम चिकित्सा करते हैं, जिस तरह से हम पढ़ाते हैं, जिस तरह से हम व्यवसाय करते हैं, यह सब सबसे तर्कसंगत, चिंतनशील तरीके से किया जाना चाहिए।

यह एक चिंतनशील जीवन है। यह यूडेमोनिया है। अगर हम इसे अच्छी तरह से करते हैं, तो यह मानव कल्याण या समृद्धि का जीवन है।

इसे थोड़ा और स्पष्ट रूप से समझाने के लिए, अन्य जीवन विकल्पों और जीवन के अन्य तरीकों के संबंध में, अरस्तू ने तीन प्रकार के जीवन को अलग किया है और चिंतनशील जीवन की श्रेष्ठता पर ध्यान दिया है। दरअसल, प्लेटो ने भी अपनी पुस्तक रिपब्लिक में यही बात कही है। यह उन क्षेत्रों में से एक है जिसमें प्लेटो और अरस्तू पूरी तरह से सहमत हैं।

वे एक दूसरे से भिन्न हैं; वे बहुत सी बातों पर असहमत हैं, लेकिन वे इस बात पर सहमत हैं कि हमारे लिए तीन सामान्य प्रकार के जीवन उपलब्ध हैं। एक है आनंद का जीवन, जहाँ व्यक्ति मुख्य रूप से सुख चाहता है, खास तौर पर धन के रूप में, धन अर्जित करना, क्योंकि धन से सभी प्रकार के सुख खरीदे जा सकते हैं, इसलिए जो व्यक्ति सुख के जीवन के लिए प्रतिबद्ध है, वह हमेशा धन के प्रति आसक्त रहेगा और उसे प्राथमिकता देगा। मैं और अधिक धन कैसे प्राप्त कर सकता हूँ? इस तरह मैं और अधिक सुख खरीद सकता हूँ।

यह आनंद का जीवन है, और बहुत से लोग इसी का पीछा करते हैं और अपना पूरा जीवन इसी के अनुसार जीते हैं। इस तरह के जीवन की समस्या यह है कि पैसा केवल एक साधन है। यह अपने आप में कोई लक्ष्य नहीं है।

चाहे आप कितना भी पैसा कमा लें, आप वास्तव में उस पैसे का आनंद सिर्फ इसलिए नहीं लेते क्योंकि वह आपको क्या दे सकता है। अरस्तू कहते हैं कि यह इस बात का संकेत है कि यह वास्तव में मनुष्य के लिए परम अच्छाई नहीं है।

हमारा अंतिम भला जो भी हो, यह सिर्फ दूसरी चीज़ों के लिए एक साधन नहीं हो सकता। और वास्तव में, इससे आपको यह जानने की इच्छा होनी चाहिए कि मैं इस सारे पैसे से क्या हासिल करना चाहता हूँ। इन सारे डॉलर से बढ़कर कुछ और भी बेहतर, कुछ और भी स्थायी, और कुछ और भी महान होना चाहिए। इसलिए, राजनेता का जीवन एक वैकल्पिक तरह का जीवन है जिसे कई अन्य लोग अपनाते हैं, और इसका उद्देश्य सम्मान और प्रतिष्ठा है।

बहुत से लोग मशहूर होने या अपने समाज में सम्मानित और प्रशंसित, प्रसिद्ध होने के लिए बहुत महत्वाकांक्षी होते हैं, और अरस्तू के दिनों में, मुझे लगता है कि आज भी कुछ हद तक, एक राजनीतिक नेता होने का सम्मान कुछ ऐसा है जो बहुत से लोगों को आकर्षित करता है। अन्य लोग मनोरंजन में अपना करियर बनाना चाहते हैं। वे एक प्रसिद्ध गायक, एक प्रसिद्ध एथलीट बनना चाहते हैं।

इसलिए, सम्मान और प्रतिष्ठा की खोज के कई अलग-अलग रूप हो सकते हैं, लेकिन फिर से, प्लेटो और अरस्तू के दिनों में, यह वास्तव में राजनेता के जीवन में सबसे अधिक परिलक्षित होता था। लेकिन यह चाहे जो भी रूप ले, हम देख सकते हैं कि राजनेता का जीवन, सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले व्यक्ति का जीवन भी त्रुटिपूर्ण है क्योंकि यह बहुत सतही है। यदि आप जो अच्छाई चाहते हैं वह दूसरों की आपके बारे में राय पर निर्भर है, तो वह बहुत आसानी से खो सकती है।

यह सतही है। यह दूसरे लोगों की सनक पर बहुत ज़्यादा निर्भर करता है। और अगर वे तय करते हैं कि उन्हें अब आपकी परवाह नहीं है, वे अब आपके एल्बम नहीं खरीदना चाहते, वे अब आपको खेलते हुए नहीं देखना चाहते, वे अब आपको पद पर नहीं देखना चाहते, तो वे आपको हटा सकते हैं।

चाहे जो भी मानवीय अच्छाई हो, वह दूसरे लोगों की सनक और पसंद पर निर्भर नहीं हो सकती। इसलिए, ये दोनों तरह के जीवन उस तरह के जीवन के मामले में विफल हो जाते हैं जिसे कोई

आदर्श मानता है। अगर यह सिर्फ़ एक साधन है या यह इतना सतही है तो यह मनुष्यों के लिए परम अच्छाई नहीं हो सकती।

तो फिर जो बचता है वह चिंतनशील जीवन है जहाँ व्यक्ति बुद्धि, ज्ञान और समझ की तलाश करता है। यही चिंतनशील जीवन का उद्देश्य है: बुद्धि और ज्ञान प्राप्त करना। ध्यान दें कि यह विशेष उद्देश्य सिर्फ़ एक साधन नहीं है। यह अपने आप में अच्छा है।

ज्ञान अपने आप में मूल्यवान है। बुद्धि अपने आप में मूल्यवान है। यह बहुत व्यावहारिक भी है, है न? ज्ञान के साथ, हम इमारतें और विमान बना सकते हैं और बीमारियों को ठीक करने वाली दवाइयाँ बना सकते हैं, और हम कपड़े बना सकते हैं और कला बना सकते हैं।

हम जो ज्ञान प्राप्त करते हैं, उससे हम बहुत कुछ कर सकते हैं। लेकिन यह अपने आप में मूल्यवान और अनमोल भी है। इससे पता चलता है कि यह सिर्फ़ एक लक्ष्य तक पहुँचने का साधन नहीं है।

और यह सिर्फ़ सतही भी नहीं है। इसे हमसे उतनी आसानी से नहीं छीना जा सकता जितना सम्मान और प्रतिष्ठा को। जब आपके पास असली ज्ञान और बुद्धि होती है, तो वह आपकी होती है।

यह आपके पास सुरक्षित है। शायद इसीलिए नीतिवचन 4:7 में कहा गया है कि चाहे आप कुछ भी करें, चाहे आपको कितना भी खर्च क्यों न करना पड़े, बुद्धि और समझ हासिल करें। इसे बाकी सभी चीज़ों से ज़्यादा मूल्यवान माना जाना चाहिए।

बुद्धि और समझ हासिल करें। हम यह आज्ञा सिर्फ़ नीतिवचन में ही नहीं बल्कि पवित्रशास्त्र में अन्यत्र भी पाते हैं—बुद्धि की खोज।

यही धर्मी व्यक्ति का उद्देश्य है। इसलिए, अरस्तू और प्लेटो यहाँ कुछ ऐसा कह रहे हैं जो वास्तव में बाइबल से बहुत मेल खाता है। अच्छाई बुद्धि और समझ है।

तो यहाँ सद्गुण नैतिकता के प्रति अरस्तू का सामान्य दृष्टिकोण है। दरअसल, मूल्य सिद्धांत की बात करें तो उनका अंतिम लक्ष्य राजनीति और राजनीतिक दर्शन है। उन्होंने इस पुस्तक, निकोमैचेन एथिक्स को राजनीति के एक प्रकार के अग्रदूत के रूप में देखा।

या राज्य कला। राजनीति को सबसे अच्छे अर्थों में समझा जाता है। मेरा मतलब है, यह इन दिनों एक गंदा शब्द हो सकता है।

थैंक्सगिविंग डिनर पर राजनीति के बारे में बात न करें। अपने चाचा को परेशान न करें। वह राजनीति को शासन कला के रूप में और एक न्यायपूर्ण नागरिक समाज के निर्माण की भलाई के बारे में बात कर रहे हैं।

यही हम सब चाहते हैं। भले ही हम राजनीतिक बहसों में उलझे हुए हैं, लेकिन क्या हम सब एक न्यायपूर्ण नागरिक समाज नहीं चाहते? हाँ। लेकिन उस बिंदु तक पहुँचने के लिए जहाँ हम ऐसा कर सकें, हमें नैतिकता के बारे में स्पष्ट और सावधानीपूर्वक सोचने की ज़रूरत है और हमें व्यक्तिगत रूप से कैसे जीना चाहिए।

व्यक्तिगत नागरिक के रूप में हमारे पास किस तरह के चरित्र लक्षण होने चाहिए? आप कम से कम मूल रूप से सभ्य नागरिकों के बिना एक न्यायपूर्ण नागरिक समाज नहीं बना सकते हैं जो अपने जीवन में कम से कम कुछ हद तक सद्गुणों के साथ जी रहे हों। टेलोस की अवधारणा, जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, अरस्तू के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

और उन्होंने, फिर से, प्लेटो और सुकरात की तरह, सोचा कि यह मूल रूप से हर उस चीज़ की जांच के लिए शुरुआती बिंदु होना चाहिए जिसे हम देखते हैं। हम सवाल पूछते हैं, चीज़ का उद्देश्य, कार्य या लक्ष्य क्या है? और यह यहाँ विशेष रूप से सच है। मानव, विशिष्ट मानवीय अच्छाई क्या है? और सद्गुण की अवधारणा वास्तव में इसी पर निर्भर है।

जब कोई व्यक्ति या कोई चीज़ अपना काम, या उद्देश्य, या लक्ष्य पूरा करती है, तो हम कहते हैं कि यह एक नेक चीज़ या नेक इंसान है। अगर आपके पास एक ऐसा कंप्यूटर है जो अपना काम पूरा कर रहा है, तो यह एक बेहतरीन कंप्यूटर है, आप इसे नेक कंप्यूटर कह सकते हैं। और इंसानों के लिए भी यही बात लागू होती है।

और हम सिर्फ़ समग्र रूप से गुणी नहीं हैं। हम अपनी जीवन परिस्थितियों के आधार पर, उम्मीद है कि विशिष्ट उत्कृष्टता प्रदर्शित करते हैं। यह आपके विशेष संदर्भ पर निर्भर करता है जिसमें आप खुद को एक शिक्षक, एक नर्स, एक बेकर, एक मोमबत्ती बनाने वाले के रूप में पाते हैं।

सही? अगर आप निर्माण कार्य में काम करते हैं, या आप नाई हैं, या आप चिकित्सक हैं, वकील हैं, तो आप एक निश्चित व्यावसायिक भूमिका निभा रहे हैं। और यह निर्धारित करेगा कि आप किस तरह के व्यक्ति हैं, आप जानते हैं, एक गुणी व्यक्ति, आप जानते हैं, रिक्त स्थान भरें, वकील, मेडिकल डॉक्टर, शिक्षक, जो भी हो। लेकिन हम अपने रिश्तों के संदर्भ में भी अलग-अलग भूमिकाएँ निभाते हैं।

मैं एक चाचा, एक भाई, एक बेटा, एक पिता और एक पति हूँ। मेरे पास कई महत्वपूर्ण संबंधपरक भूमिकाएँ हैं। और मैं खुद को ऐसी विशेष जीवन परिस्थितियों में पाता हूँ जहाँ मुझे कुछ ऐसे तरीकों से कार्य करने के लिए कहा जाता है जिन्हें हम दयालु, या उदार, या साहसी कह सकते हैं।

या बस। तो आपके पास ये सभी जीवन परिस्थितियाँ, संदर्भ, भूमिकाएँ और रिश्ते हैं जो इस बात को प्रभावित करेंगे कि एक सद्गुणी व्यक्ति कौन है। या एक सद्गुणी व्यक्ति जो उन संदर्भों में सद्गुणी तरीके से कार्य करता है।

इसलिए, हमारे गुण, मानवीय गुण, इस बात से निर्धारित होते हैं कि विशिष्ट जीवन संदर्भों में ठीक से काम करना क्या मायने रखता है। गुणों के दो बुनियादी प्रकार या गुणों की दो मुख्य श्रेणियाँ हैं। एक बौद्धिक है, और दूसरा नैतिक है।

बौद्धिक गुण निर्देश, अध्ययन, कक्षा असाइनमेंट करने, व्याख्यान सुनने और बड़े पैमाने पर पढ़ने के माध्यम से विकसित होते हैं। आप बिना कुछ और किए, बस ऐसा करके सभी प्रकार के बौद्धिक गुण विकसित कर सकते हैं। आप अध्ययन और निर्देश के माध्यम से किसी निश्चित विषय में महारत हासिल कर सकते हैं।

लेकिन नैतिक गुण ऐसे नहीं होते। आप सिर्फ किताबें पढ़कर नैतिक गुण विकसित नहीं कर सकते, भले ही वे महान नैतिक उदाहरणों के बारे में वाकई प्रेरणादायक किताबें ही क्यों न हों। मैं मदर टेरेसा, अथानासियस, नेल्सन मंडेला और मार्टिन लूथर किंग के बारे में चाहे जितनी भी किताबें पढ़ लूं, है न? एक ऐसे व्यक्ति का नाम बताइए जिसके चरित्र में सराहनीय या सद्गुणी गुण हों।

उनके जीवन के बारे में सिर्फ पढ़ना ही काफी नहीं है। उनकी निजी जीवन-चरित्रियों का अध्ययन करना भी काफी नहीं है। ऐसी कुछ चीज़ें हैं जो आपको अपने अंदर समान गुण विकसित करने के लिए करनी होंगी।

इसलिए नैतिक गुण प्रशिक्षण, जानबूझकर अभ्यास और अच्छी आदतों के विकास के माध्यम से आते हैं। यह कला, संगीत या एथलेटिक्स में प्रशिक्षण की तरह ही है। आप एक अच्छे बास्केटबॉल खिलाड़ी कैसे बनते हैं? क्या यह सिर्फ लैरी बर्ड और मैजिक जॉनसन के बारे में किताबें पढ़ने से होता है? और लेब्रोन जेम्स और जेम्स हार्डन, महान बास्केटबॉल खिलाड़ी? क्या यह सब करने से हो जाएगा? नहीं, आपको अभ्यास करने की ज़रूरत है।

आपको गेंद लेकर बाहर जाना होगा और अभ्यास करना होगा, पासिंग अभ्यास, फ्री थ्रो अभ्यास और शूटिंग अभ्यास। इन बास्केटबॉल कौशल को विकसित करने के लिए आपको जो कुछ भी करने की ज़रूरत है, वह सब करें। ज़रूर, पढ़ने से मदद मिलती है, है न? आप सीख सकते हैं कि अलग-अलग खिलाड़ियों ने अपने करियर में सुधार के लिए क्या किया।

लेकिन मुख्य बात जो आपको करने की ज़रूरत है वह है उसी तरह सद्गुणों का अभ्यास करना। आप एक बेहतर पियानो वादक कैसे बनेंगे? अध्ययन निश्चित रूप से मदद करता है, लेकिन आपको अपने स्केल को बार-बार और बार-बार करने की ज़रूरत है। इसलिए, अरस्तू बताते हैं कि एक अधिक साहसी व्यक्ति, एक अधिक न्यायप्रिय व्यक्ति, एक अधिक उदार व्यक्ति बनने के लिए, आपको वास्तविक अभ्यास में आचरण के इन विशेष सद्गुणों को प्रदर्शित करने की आवश्यकता है।

आपको बार-बार अच्छे काम करके अच्छी नैतिक आदतें विकसित करने की ज़रूरत है। इसलिए, आदत डालने पर बहुत ज़ोर दिया जाता है। हमें उदार काम करके, उदार आदतों की आदत डालनी चाहिए।

मेरी पत्नी और मैंने, अपनी शादी के शुरूआती दिनों में ही पाया कि हम दोनों में से कोई भी उतना उदार नहीं था जितना हम होना चाहते थे। और ऐसा नहीं था कि हम बहुत कंजूस या लालची थे, लेकिन हमें लगा कि हमें यह गुण विकसित करने की ज़रूरत है। और इसलिए, हमने यह तय किया, आप जानते हैं, हमने इसे एक मानक अभ्यास बना लिया कि जब सर्वर कम से कम सभ्य हो तो हम उदारता से टिप देंगे।

खास तौर पर अगर उन्होंने हमें भोजन से पहले प्रार्थना करते देखा, तो यह सुधारना एक अलग बात है। यह एक बुरी आदत है, बहुत से धार्मिक लोग, आप जानते हैं, खराब टिप देने वाले होते हैं। अगर हमें भोजन के समय प्रार्थना करते देखा गया, तो इस तरह से हमें कम से कम 15% टिप मिलती थी।

लेकिन अगर इसके अलावा, सेवा कम से कम सभ्य हो, अगर अच्छी न हो, तो हम उससे कहीं ज़्यादा टिप देना चाहेंगे। और यह उदारता की आदत का एक तरह का अभ्यास और विकास है। तो, यह वह चीज़ है जिसके बारे में अरस्तू बात कर रहे हैं।

आप जानते हैं, आप जानबूझकर सद्गुणों का अभ्यास करते हैं, और अंततः, यह एक निश्चित प्रकार के चरित्र गुण में बदल जाएगा। आप ऐसा सालों-साल करते हैं, और अंततः, आप एक ऐसे व्यक्ति बन जाते हैं जो उदार है। यह आपके चरित्र का हिस्सा बन जाता है।

और ऐसा ही अन्य सभी गुणों के लिए भी होता है। आदतन दयालुता से काम करने से, अंततः लोग कहेंगे, ओह, यह एक दयालु व्यक्ति है। विभिन्न संदर्भों में बार-बार साहसपूर्वक काम करने से, अंततः आप एक साहसी व्यक्ति बन जाते हैं।

इसलिए, सद्गुण प्रशिक्षण के माध्यम से आते हैं। अरस्तू ने सद्गुण के बारे में एक और बात कही है कि यह कम से कम नैतिक सद्गुण है, उन्होंने तर्क दिया, शांति चरम सीमाओं के बीच मध्य बिंदु। अधिकांश नैतिक सद्गुण दो बुराइयों के बीच का मध्य बिंदु होते हैं।

तो, सद्गुणों की इस तालिका पर विचार करें, जो उन 15 में से हैं, जिनका अरस्तू ने अपने निकोमैकेन एथिक्स में कुछ गहराई से अन्वेषण किया है। तो, आपके पास एक निश्चित संदर्भ है, जैसे कि खतरा, आप एक खतरनाक स्थिति में हैं, और कुछ अच्छा करने की आवश्यकता है जिसके लिए आपको कुछ करने की आवश्यकता होगी। इसके लिए आपको खुद को एक निश्चित मात्रा में खतरे में डालने की आवश्यकता होगी।

आप कमी की ओर या अधिकता की ओर गलती कर सकते हैं। कमी की ओर, बुराई कायरता है। आप कायर हो सकते हैं और खतरे से पूरी तरह बच सकते हैं।

या फिर, अति की ओर, आप दुस्साहसी हो सकते हैं। सैन्य संदर्भ में, ऐसी बहुत सी परिस्थितियाँ होती हैं जहाँ हाथ में मौजूद कार्य साहस की माँग करता है। आप खतरे में पड़ने वाले हैं, शायद मौत भी।

कायर कहता है कि मैं ऐसा नहीं करूँगा। खैर, तुम्हारे कमांडिंग ऑफिसर ने तुम्हें ऐसा करने को कहा है। मैं ऐसा नहीं करना चाहता। मुझे डर लग रहा है।

यह कायरता है। मूर्ख व्यक्ति कहता है, चलो, मैं अब तैयार हूँ। खैर, हमें इसकी सावधानीपूर्वक योजना बनाने की आवश्यकता है।

कुछ महत्वपूर्ण सामरिक बातें हैं। मुझे परवाह नहीं है। चलो चलते हैं। चलो गोता लगाते हैं।

यह मूर्खतापूर्ण है। साहसी व्यक्ति जानता है कि ठीक है, हम इसके लिए प्रशिक्षण लेने जा रहे हैं; यह खतरनाक है, लेकिन हम इसे सही तरीके से करने जा रहे हैं। और हम इसे यथासंभव सुरक्षित रूप से खेलने जा रहे हैं, जो मिशन को पूरा करने के अनुरूप है।

तो यही साहस है। यह चरम सीमाओं के बीच का एक माध्यम है, कायरता और मूर्खता की क्रूर चरम सीमा। आनंद के संदर्भ में, आप असंवेदनशील नहीं होना चाहते और सभी आनंद से बचना चाहते हैं।

लेकिन आप फिजूलखर्ची भी नहीं करना चाहते, कोई ऐसा व्यक्ति जो हमेशा मौज-मस्ती में लिप्त रहता हो। संयम इन दोनों चरम सीमाओं के बीच का मध्य है। जब संपत्ति की बात आती है, तो आप कंजूस नहीं बनना चाहते।

लेकिन आप जॉन पॉल सार्त्र की तरह बहुत ज़्यादा दान देने वाले व्यक्ति भी नहीं बनना चाहते, जिन्हें पैसे की कोई समझ ही नहीं थी। और आप किसी कैफ़े में जाकर कुछ कप कॉफ़ी पीते हैं और फिर कैफ़े की मेज़ पर नोटों का एक बड़ा बंडल छोड़ देते हैं। और मुझे यकीन है कि उसका सर्वर यह देखकर खुश हुआ होगा, लेकिन, आप जानते हैं, यह उसके निजी वित्त के लिए अच्छा नहीं था।

यह उनके लिए अच्छी बात थी; उन्होंने बहुत सी किताबें लिखीं जो खूब बिकीं। ज़्यादातर लोग जब उदारता के मामले में संघर्ष करते हैं, तो वे कंजूस होते हैं, ठीक वैसे ही जैसे ज़्यादातर लोग साहस के मामले में कायरता के मामले में संघर्ष करते हैं।

हम सुरक्षित खेलना चाहते हैं, और इसी वजह से, आप जानते हैं, हम एक निश्चित दिशा में गलती करने जा रहे हैं। लेकिन मुझे लगता है कि कुछ लोग मूर्ख हैं। खैर, मुझे पता है कि कुछ लोग मूर्ख हैं।

कभी-कभी, ये महान पर्वतारोही, चट्टान पर चढ़ने वाले लोग होते हैं, जो अपनी मौत के मुंह में चले जाते हैं क्योंकि उन्होंने उचित सावधानी नहीं बरती। बहुत से लोग मूर्खतापूर्ण काम करके मर गए हैं। और मुझे लगता है कि कुछ लोगों ने, आप जानते हैं, अपने दान में असाधारण होने के कारण खुद को भयानक परिस्थितियों में डाल दिया है।

हम यहाँ सद्गुणी बनना चाहते हैं। जनमत, हम तुच्छ नहीं बनना चाहते, लेकिन हम घमंडी भी नहीं बनना चाहते। एक निश्चित स्वस्थ गर्व है जिसे हमें अपना लक्ष्य बनाना चाहिए।

मनोरंजन, आप असभ्य नहीं बनना चाहते। आप विदूषक नहीं बनना चाहते। ये ऐसी बुराइयाँ हैं जो अगर खतरनाक नहीं हैं, तो कम से कम परेशान करने वाली हैं।

क्या आप कभी किसी के आस-पास रहे हैं और वे सिर्फ मज़ाक करते हैं? वे कभी गंभीर नहीं होते। यह एक मज़ाकियापन है। लेकिन फिर असभ्य लोग, आप जानते हैं, वे उबाऊ होते हैं, और वे अपने तरीके से परेशान करने वाले होते हैं।

एक मजाकिया व्यक्ति जानता है कि कैसे बातचीत में हल्कापन पैदा किया जाए और कुछ हास्यपूर्ण टिप्पणियों, चुटकुलों, मजाकिया टिप्पणियों के साथ बातचीत और रिश्ते को मसालेदार बनाया जाए। यही वह मतलबी, सद्गुणी मतलब है जिसका हमें लक्ष्य रखना चाहिए। और फिर, अंत में, जब भावनाओं की बात आती है, तो आप शर्मिले नहीं बनना चाहते, लेकिन आप बेशर्म भी नहीं बनना चाहते।

आप एक निश्चित विनम्रता का प्रदर्शन करना चाहते हैं। और वैसे, हमारी जैसी बेशर्म संस्कृति में, कई मायनों में, जो विनम्रता है वह बहुत से लोगों को शर्मिंदगी लगेगी। इसलिए, एक और बात जिसके बारे में हम बात कर सकते हैं वह यह है कि किसी विशेष संस्कृति के भीतर विशेष अतिरेक और कमियाँ किस तरह से कुछ गुणों को बुराइयों की तरह दिखा सकती हैं।

और मुझे लगता है कि आज हमारी संस्कृति में कई मायनों में, बहुत से ईसाई गुण बहुत से लोगों को बुराइयों की तरह लगते हैं क्योंकि हमारी संस्कृति कई मायनों में बहुत दुष्ट है। वैसे भी, यह अरस्तू की सद्गुणों की तालिका का एक नमूना है और वह उन्हें दुष्ट चरम सीमाओं के बीच सद्गुण के रूप में कैसे विश्लेषित करता है। नैतिक सद्गुण विकसित करने का एक और महत्वपूर्ण आयाम नैतिक उदाहरण हैं।

हालाँकि सद्गुणों के विकास के लिए सिर्फ सद्गुणी लोगों के बारे में पढ़ना ही पर्याप्त नहीं है, लेकिन यह मदद जरूर करता है। हालाँकि, इससे भी ज्यादा मददगार है किसी ऐसे व्यक्ति के साथ रहना जो सद्गुणी हो, जो कुछ सद्गुणों का आदर्श हो। हम इतिहास से सद्गुणी लोगों के सभी प्रकार के उदाहरणों के बारे में सोच सकते हैं, लेकिन अपने जीवन में ऐसे लोगों के बारे में सोचें।

हो सकता है कि कोई ऐसा व्यक्ति जिसने आपको सलाह दी हो या कम से कम आपके साथ रहा हो, ताकि आपके लिए कुछ खास गुणों को उजागर या उदाहरण के रूप में प्रस्तुत कर सके, जो बहुत प्रेरणादायक हो। और आप कहते हैं, वाह, मैं उस व्यक्ति की तरह बनना चाहता हूँ। मैं भी उनकी तरह वह विशेषता प्रदर्शित करना चाहता हूँ।

यह हमारे नैतिक जीवन में बेहद मददगार है क्योंकि हम खुद सद्गुण विकसित करते हैं। सद्गुणों को व्यक्तिगत आख्यानो और समुदायों के लोगों के संदर्भ में भी समझा जाना चाहिए। सद्गुण नैतिकता के भीतर यह एक महत्वपूर्ण विषय है।

एक अधिक समकालीन सद्गुण नैतिकतावादी, एलिस्टेयर मैकइंटायर, वास्तव में 1981 में अपनी पुस्तक, आफ्टर वर्चु के प्रकाशन के बाद सद्गुण नैतिकता में इस पुनरुत्थान या पुनर्जागरण का नेतृत्व करने में सबसे आगे थे। वह कथा और समुदायों, स्थानीय समुदायों और कहानी पर बहुत जोर देते हैं। और यह सद्गुण नैतिकता का एक अलग दृष्टिकोण है जो मुझे लगता है कि बहुत महत्वपूर्ण है।

हम जिस समुदाय में रहते हैं, उसमें हमारी विशेष भूमिकाएँ किसी कहानी के पात्रों की तरह होती हैं। खुद के बारे में हमारी समझ, साथ ही दूसरे लोगों के बारे में, किसी विशेष कथा में हमारी भूमिका के संदर्भ में बहुत हद तक तय होती है या तय हो सकती है। इस कहानी में हम जो भूमिका निभाना चाहते हैं, वह हम निभाना चाहते हैं।

यह मेरे जीवन की कहानी है या इस समुदाय या संस्था के भीतर मेरी कहानी है, जो कुछ खास चीजें हासिल करने की कोशिश कर रही है। यह हमें उन सद्गुणों को समझने और उन्हें बेहतर ढंग से समझने में मदद कर सकता है जिन्हें हम अपने जीवन में अपनाना चाहते हैं। ठीक है, तो सद्गुण नैतिकता।

उम्मीद है कि यह स्पष्ट है कि यहाँ नैतिक जीवन और हमारे समुदायों और हमारे समाज में ईसाइयों के रूप में अच्छाई का अनुसरण करने के लिए बहुत सारी अंतर्दृष्टि और प्रेरणा है। यह नैतिक प्रेरणा जो सद्गुण नैतिकता प्रदान करती है, सद्गुण नैतिकता की महान शक्तियों में से एक है। विशेष रूप से, एक ईसाई दृष्टिकोण से, सद्गुण के लिए प्रशिक्षण का यह विचार कुछ ऐसा है, भले ही हम नया नियम पढ़ें, हम आम तौर पर शास्त्रों को पढ़ते हैं; भले ही सद्गुण के लिए सक्रिय प्रशिक्षण पर जोर दिया गया हो, इसे अनदेखा करना आसान है।

लेकिन पॉल ने इस बारे में दो जगहों पर बात की है। 1 कुरिन्थियों 9 में, आयत 24 से 27 में उन्होंने इस बारे में बात की है। पॉल ने लिखा है कि जो लोग ओलंपिक खेलों के लिए प्रशिक्षण लेते हैं, वे बहुत अनुशासन और जोश के साथ ऐसा करते हैं।

वे कहते हैं कि वे ऐसे मुकुट के लिए प्रशिक्षण लेते हैं जो टिकेगा नहीं। लेकिन हम, मसीही होने के नाते, ऐसी चीज़ के लिए प्रशिक्षण ले रहे हैं जिसके अनंत परिणाम हैं। तो, हमें ईश्वरीयता के लिए प्रशिक्षण में कितना अधिक समर्पित होना चाहिए? वे 1 तीमोथियुस 4:7 और 8 में भी कुछ ऐसा ही कहते हैं, कि हमें ईश्वरीय होने के लिए प्रशिक्षण लेना चाहिए।

और इसका मतलब है कि हमें आध्यात्मिक अनुशासन का अभ्यास करना चाहिए। आप ईश्वरीयता के लिए कैसे प्रशिक्षण लेते हैं? ठीक है, आप अनुशासित तरीके से प्रार्थना करते हैं। आप शास्त्र पढ़ते हैं, उम्मीद है कि अनुशासित तरीके से।

तुम उपवास करो। तुम ध्यान करो। तुम पूजा करो।

आप समय-समय पर एकांतवास, स्वीकारोक्ति और समर्पण का अभ्यास करते हैं। आपके पास ये सभी आध्यात्मिक अनुशासन हैं जो हमें ईश्वरीय बनने के लिए प्रशिक्षित करने के लिए उपलब्ध हैं। उनमें से कुछ ईश्वर के निकट आने पर केंद्रित हैं, जैसे कि पूजा और प्रार्थना।

अन्य लोग आत्म-त्याग पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जैसे एकांत और उपवास। कुछ लोग हमारे ज्ञान के आधार, अध्ययन और ध्यान को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करते हैं। लेकिन सभी आध्यात्मिक अनुशासनों का उद्देश्य हमारे अंदर कुछ खास चरित्र लक्षण विकसित करना, हमें पवित्रता में बढ़ाना और हमें आत्मा के कार्य के साथ अधिक निकट सहयोग में लाना है।

आपको इस तरह का विचार कांट या मिल, बेंथम या सामाजिक अनुबंध सिद्धांतकारों से नहीं मिलता, जो वास्तव में इस पर ध्यान केंद्रित नहीं करते हैं। लेकिन सद्गुण नैतिकता में, विशेष रूप से अरस्तू में, लेकिन अन्य लोगों में भी, आदत और अनुशासन के माध्यम से नैतिक निर्माण पर जोर दिया गया है। यह यहाँ एक प्रमुख विषय है।

और यह कुछ ऐसा है जिसे, ईसाई होने के नाते, हमें पुष्टि करने की आवश्यकता है। इस बात का कोई सबूत नहीं है कि अरस्तू ने कभी पुराने नियम की कोई किताब पढ़ी हो। और वह नए नियम से लगभग चार शताब्दी पहले रहते थे।

तो, वह इस पर दार्शनिक रूप से पहुंच रहा है। वह प्रशिक्षण के लाभ को सद्गुणी मानता है। और एक तरह से, यह प्रेरित पौलुस द्वारा अपने पत्रों में कही गई बातों के साथ पूरी तरह से संगत है।

निष्पक्षता के आदर्श के बारे में भी कुछ संदेह हैं, जिसका समर्थन कांट, बेंथम और मिल जैसे दार्शनिकों ने किया है। नैतिक निर्णय लेते समय हमें हमेशा पूरी तरह निष्पक्ष रहना चाहिए। अरस्तू की सद्गुण नैतिकता, जिसमें रिश्तों और समुदाय में आपके स्थान पर पूरा जोर दिया गया है, जहाँ आप एक अनोखे तरीके से बंधे हुए हैं और परिवार के सदस्यों और दोस्तों के लिए आपकी विशेष चिंताएँ हैं इत्यादि।

वह इस बारे में यथार्थवादी हैं। उनका कहना है कि पक्षपात करना ठीक है। उपयोगितावादियों के लिए यह उतना सही नहीं है।

कांट के साथ भी ऐसा ही है। इस स्थिति की कल्पना करें। आप दो लोगों के साथ एक नाव में हैं।

एक ऑन्कोलॉजिस्ट जो कैंसर का इलाज जानती है लेकिन उसने किसी को नहीं बताया। वह खुद ही इस पर शोध कर रही है। उसने पता लगाया है कि कैंसर का इलाज कैसे किया जा सकता है।

एक उत्सव के रूप में, वह आपके साथ इस डोंगी यात्रा पर जाने का फैसला करती है। और आपकी माँ के साथ। डोंगी में, आप, कैंसर का इलाज जानने वाले ऑन्कोलॉजिस्ट और आपकी माँ हैं।

आप अर्कासिस नदी में जा रहे हैं। आप बहुत अच्छा समय बिता रहे हैं। अपनी बातचीत के दौरान, आपको पता चलता है कि यह ऑन्कोलॉजिस्ट वास्तव में तैर नहीं सकता।

यह थोड़ा परेशान करने वाला है। फिर आपको यह भी लगता है कि आपकी माँ भी तैर नहीं सकती। शायद अब आप समझ गए होंगे कि यह सब कहाँ जा रहा है।

जैसे-जैसे आप नदी के किनारे जा रहे हैं, पानी की तेज़ आवाज़ तेज़ होती जा रही है। फिर एक साथ आप सभी को एहसास होता है कि हम एक झरने की ओर बढ़ रहे हैं।

फिर आपको याद आता है, अरे हाँ, अरकंसास नदी में बहुत तेज़ गिरावट है। यह लगभग 50 फ़ीट है। अरे यार, हम डूब गए।

हम सचमुच डूब जाएंगे। मैं क्या करूँ? खैर, तुम इस समय झरने के बहुत करीब हो और बाहर निकलकर अपनी माँ और ऑन्कोलॉजिस्ट दोनों को नहीं बचा पाओगे। लेकिन तुम्हें उनमें से कम से कम एक को तो बचाना ही होगा।

तुम अच्छे तैराक हो। हालाँकि, तुम कोई अलौकिक प्राणी नहीं हो। तुम सिर्फ़ एक को ही बचा सकते हो।

आप किसे बचाएंगे? क्या आप माँ को बचाएंगे? आप माँ से प्यार करते हैं, लेकिन उन्हें कैंसर का इलाज नहीं पता। आखिरकार, उनकी उम्र बढ़ती जा रही है। या आप उस ऑन्कोलॉजिस्ट को बचाएंगे जो कैंसर का इलाज जानता है और संभावित रूप से लाखों लोगों की जान बचा सकता है? आप क्या करेंगे? उपयोगितावादी के लिए उत्तर स्पष्ट है।

आपको ऑन्कोलॉजिस्ट को बचाना होगा। सॉरी, माँ। मैं आपसे प्यार करता हूँ, लेकिन।

और शायद कांटियन के साथ भी ऐसा ही है। कम से कम कांटियन नैतिकता पर यह स्पष्ट नहीं है कि माँ को बचाना ठीक है। क्या आप इसे सार्वभौमिक बना सकते हैं? शायद।

शायद नहीं। अरस्तू के लिए यह बहुत स्पष्ट है। आप किसे बचाते हैं? अपनी माँ को।

क्यों? क्योंकि वह तुम्हारी माँ है। वह तुम्हारी माँ है। उसका तुम्हारे साथ एक खास रिश्ता है।

और, आप जानते हैं, उस प्रवृत्ति के अनुसार कार्य करना पूरी तरह से उचित है। यह कुछ ऐसा है जिसे कांट, वैसे, फिर से, माँ को बचाने के लिए उस प्रवृत्ति के अनुसार कार्य करते हुए नकार देंगे और त्याग देंगे। अरस्तू कहते हैं कि यह बिल्कुल ठीक है।

अपनी माँ को बचाओ। तो, मुझे लगता है कि यह हमारे अंतर्ज्ञान के साथ सबसे अच्छा मेल खाता है। अपनी माँ को बचाना ठीक है।

कम से कम उसे बचाना ठीक है, न कि ऑन्कोलॉजिस्ट को। कुछ ऐसा जो, आप जानते हैं, इनमें से कुछ अन्य नैतिक सिद्धांत नहीं बता सकते। दूसरे शब्दों में, पक्षपात करना ठीक है।

निष्पक्षता का वह तथाकथित आदर्श। हो सकता है कि यह कुछ संदर्भों में आदर्श हो लेकिन अन्य में नहीं। तो यह सद्गुण नैतिकता की ताकत है।

लेकिन फिर भी कुछ समस्याएं हैं। सदाचार नैतिकता के साथ एक बड़ी समस्या यह है कि यह सही कार्य या कर्तव्य को ध्यान में नहीं रखती।

इस सिद्धांत में कर्तव्य के लिए कोई वास्तविक स्थान नहीं है। यह हमें यह बताने में अच्छा काम करता है कि किस तरह के चरित्र लक्षण आदर्श हैं, लेकिन हमारे पास कर्तव्य और दायित्व के लिए कोई आधार नहीं है। यह बात सदाचार नैतिकता से पूरी तरह से छूट जाती है।

यह सही कार्य है जो आपको करना चाहिए और आपको किसी विशेष स्थिति में ऐसा क्यों करना चाहिए। और फिर आपके सामने एक और समस्या है, नैतिक संघर्ष की समस्या, जो तब उभरती है जब हम इस बात पर विचार करते हैं कि इन दो गुणों में से कौन सा अलग-अलग दिशाओं की ओर इशारा करता है जिसे हमें प्रदर्शित करना चाहिए। कभी-कभी, मेरी पत्नी मुझसे पूछती है, मैं कैसा दिखता हूँ? सौभाग्य से, अधिकांश दिनों में, उत्तर बहुत आसान और सरल होता है।

मैं सच बोल सकता हूँ और ईमानदारी से कह सकता हूँ, प्रिये, तुम बहुत अच्छी लग रही हो। लेकिन शायद उसके बाल खराब हो रहे हैं। या शायद मैं उस खास पोशाक या पहनावे का प्रशंसक नहीं हूँ।

खैर, मैं दयालु होना चाहता हूँ। शायद मैं बता सकता हूँ कि वह वास्तव में आलोचनात्मक टिप्पणी करने के मूड में नहीं है, जैसे कि, मुझे नहीं पता, वह स्कर्ट आपको थोड़ा भद्दा दिखाती है। इसलिए, मैं दयालु होना चाहता हूँ लेकिन मैं ईमानदार भी रहना चाहता हूँ।

अरस्तू की परिषद से यह स्पष्ट नहीं है कि सदाचार नैतिकता के लिए सबसे अच्छी प्रतिक्रिया क्या है। हाल ही में एक बीमा कंपनी के लिए एक विज्ञापन आया है जिसमें अब्राहम लिंकन अपनी पत्नी मैरी टॉड के साथ हैं, और इसे इस तरह से बनाया गया है कि ऐसा लगे कि यह वास्तविक फुटेज है। यह ब्लैक एंड व्हाइट है।

यह बहुत दानेदार है, जैसे कि 1860 के दशक में उनके पास वीडियो क्षमता थी। वैसे भी, मैरी टॉड कहती हैं, क्या यह ड्रेस मुझे मोटा दिखाती है? बेशक, वह थोड़ी मोटी हैं। वहाँ ईमानदार अबे है।

वह सवाल का जवाब नहीं दे सकता। वह चिढ़ रही है क्योंकि वह सवाल का जवाब नहीं दे रहा है, लेकिन वह ईमानदार अबे है। अपनी पत्नी की भावनाओं को बचाने के लिए वह जो सबसे अच्छा कर सकता है, वह है सही जवाब न देना।

बेशक, सच्चा जवाब है, हाँ, आप उसमें मोटे दिखते हैं क्योंकि आप मोटे हैं। हालाँकि, जब सद्गुण नैतिकता की बात आती है, तो हमारे पास यह निर्धारित करने का कोई एल्गोरिदम या तरीका नहीं है कि कब किसी विशेष सद्गुण को दूसरे सद्गुण पर हावी होना चाहिए, और यह सद्गुण नैतिकता की एक निश्चित सीमा भी होगी। इसलिए, इन सभी अन्य सिद्धांतों की तरह, सद्गुण नैतिकता कुछ मामलों में मजबूत है, लेकिन फिर दूसरों में कमजोर है जहाँ हम देखते हैं कि इसे मदद की ज़रूरत है, अन्य नैतिक विचारों और सिद्धांतों से किसी प्रकार के पूरक की आवश्यकता है।

तो, यह है सदाचार नैतिकता।

यह डॉ. जेम्स एस. स्पीगल द्वारा ईसाई नैतिकता पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सदाचार नैतिकता पर सत्र 6 है।